दैनिक भास्कर

प्राचीन ज्ञान से लेकर आधुनिक कारोबार तकः कॉर्पोरेट स्थायित्व की दिशा में भारत का मार्ग

प्रिया अग्रवाल हेब्बर

जलवायु सम्मेलनों और कार्बन क्रेडिट्स से बहुत पहले भारत ने पर्यावरण और धरती के प्रति अपनी संवेदनशीलता का प्रदर्शन किया। हमारे 3000 साल प्राचीन संस्कृत पाठ्य में आज की तरह के पर्यावरण संबंधी घोषणापत्र नहीं थे। हालांकि उनमें स्पष्ट रूप से कहा गया है कि धरती एक हितधारक है, केवल संसाधन नहीं। वेदों में भी ब्रह्मांड को नियन्त्रित करने वाली प्राकृतिक व्यवस्था का विवरण दिया गया है, जो प्रकृति में संतुलन की आवश्यकता तथा इसे बाधित करने से होने वाले नुकसान की बात करते हैं। प्राचीन ज्ञान एवं अप्रत्याशित आर्थिक विकास के साथ, भारत लीडर बनने और दुनिया को यह दिखाने के लिए तत्पर है कि समृद्धि और धरती की रक्षा करना एक दूसरे के पूरक लक्ष्य हो सकते हैं। आज की विश्वस्तरीय अर्थव्यवस्था में निगमों का मूल्यांकन न सिर्फ लाभ से बल्कि उनके प्रभाव से भी किया जाता है। अपने पर्याप्त संसाधनों, प्रभाव एवं पहुंच के साथ कारोबारों की जिम्मेदारी है कि वे स्थायी भविष्य की दिशा में काम करें। पर्यावरण संरक्षण अनिवार्य है, यह विकास एवं लाभ को बढ़ावा देता है। ऐसे में निगमों को प्रोत्साहित किया जाता है कि वे अल्पकालिक लाभ के बजाए इस बात को समझें कि उनका भविष्य उनके आस-पास के पर्यावरण के स्वास्थ्य से जुड़ा है। अपने पर्यावरणी फुटप्रिन्ट के लिए जवाबदेहिता को सुनिश्चित कर कारोबार बड़े पैमाने पर उद्योगों, समुदायों एवं नीतिनिर्माताओं में बदलाव ला सकते हैं। प्रभावी पर्यावरणी नेतृत्व में इरादा, पारदर्शिता और दीर्घकालिक परिप्रेक्ष्य शामिल होता है। यह कारोबारों को अनुपालन के दायरे से बढ़कर सक्रिय बदलाव के लिए प्रेरित करता है जैसे कार्बन में कमी लाने के लक्ष्य तय करना, हरित इनोवेशन में निवेश करना और संसाधनों के जिम्मेदाराना उपयोग को बढ़ावा देना। इस जिम्मेदारी को भावी संचालन के लिए अवसर के रूप में देखा जा सकता है, जो न सिर्फ उपभोक्ताओं को आकर्षित करता है बल्कि उद्योग जगत पर अनुकूल प्रभाव भी उत्पन्न करता है। जब निगम

इस जिम्मेदारी को अनुशासन के साथ निभाते हैं, वे जलवायु परिवर्तन से निपटने में योगदान देते हैं। वेदांता में हम भारतीय सभ्यता के मूल्यों से प्रेरणा लेकर सुनिश्चित करते हैं कि हमारे कारोबार के सभी फैसलों में स्थायित्व को महत्व दिया जाए। अपने प्रयासों के परिणामस्वरूप वित्तीय वर्ष 23 के बाद से हमने कार्बन उत्सर्जन में 28 मिलियन टन कमी लाने में योगदान दिया है। नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश वेदांता की योजनाओं का अभिन्न हिस्सा है। कंपनी ने पावर डिलीवरी एग्रीमेन्ट्स के माध्यम से अपनी नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता को 1.03 गीगावॉट तक पहुंचा लिया है। भारत के एकमात्र कम कार्बन धातु जैसे रीस्टोरा, रीस्टोरा अल्ट्रा (एलुमिनियम) और इकोजेन (जिंक) ने विकाबोर्नीकरण पर कंपनी के फोकस को दशार्या है। जल संरक्षण वेदांता के लिए एक और महत्वपूर्ण क्षेत्र है। कंपनी की सब्सिडरी हिंदुस्तान जिंक को 2.41 गुना जल सकारात्मक कंपनी के रूप में प्रमाणित किया गया है, जो जल के पुनःचक्रीकरण और पुनःपूर्ति में कंपनी के प्रयासों को दशार्ता है। जीवनशैली के वैदिक सिद्धान्तों के साथ इस तरह की पहलें प्राकृतिक संसाधनों के साथ तालमेल बनाते हुए भावी पीढ़ियों के लिए उनकी उपलब्धता को सुनिश्चित करती हैं। जैवविविधता का संरक्षण भी वेदांता के सस्टेनेबिलिटी एजेंडा का अभिन्न हिस्सा है। कंपनी 7 मिलियन पेड़ लगाने के लिए प्रतिबद्ध है और पर्यावरण पर शुद्ध सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करने के लिए 3 मिलियन पेड़ लगा चुकी है। मियावाकी वृक्षारोपण और मैन्ग्रोव वृक्षारोपण जैसी परियोजनाएं कार्बन उत्सर्जन को कम करने और प्राकृतिक आवास के पुनरुद्धार में योगदान दे रही हैं। विश्वस्तरीय परिप्रेक्ष्य से देखा जाए तो हम धरती और पर्यावरण संरक्षण के लक्ष्यों को तभी हासिल कर सकते हैं जब हम इसे अपने रोजमर्रा के जीवन और संचालन का अभिन्न हिस्सा बना लें। कारोबार, पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों एवं सेवाओं के साथ इसमें मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। टेक्नोलॉजी में निरंतर निवेश अवसर और समाधान उत्पन्न करता है। हम पहले से इसके परिणाम देख रहे हैं। विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर इस बात पर जोर देना जरूरी है कि लोगों एवं धरती के कल्याण में योगदान देना महत्वपूर्ण है। कारोबार, सरकारें और सिविल सोसाइटी को एक साथ मिलकर इन लक्ष्यों को हासिल करने के लिए प्रयास करने चाहिए। भारत एक विकासशील अर्थव्यवस्था है और विकास के लिए वैकल्पिक दृष्टिकोण दशार्ने की मजबूत स्थिति में है।

लेखिकाः नॉन-एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर, वेदांता लिमिटेड, चेयरपर्सन, हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड।